PUNE RESEARCH TIMES ISSN 2456-0960
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES VOL 8, ISSUE 2

भोजपुरी भाषा के विविध स्वरूपों का सामाजिक भाषा, वैज्ञानिक अध्ययन

नलिनी शर्मा

पी. एच. डी. रिसर्च स्कॉलर

भाषा विज्ञान विभाग,

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

उत्तर प्रदेश, भारत.

सारांश–

भोजपुरी भाषा जो कि भारत ही नहीं अपितु विश्व के बहुतेरे देशों में करोड़ों लोगों की मातृभाषा बनकर सेवा करती रही है, आज भी राजनीतिक और सामाजिक उपेक्षा का दंश झेल रही है। भारत के 2011 ई0 की जनगणना को आधार मानें तो तकरीबन 50,579,447 लोग अपनी प्रथम भाषा के रूप में इसे बोलते हैं। यह विडम्बना नहीं तो और क्या है कि एक ऐसी भाषा जिन्हें बोलनेवालों की इतनी अधिक संख्या है उसे आज तक कार्यालयी भाषा तक का दर्जा नहीं मिल पाया है। भारत के संविधान की अष्टम अनुसूची में दर्ज किये जाने की ललक लिये आज भी यह राजनीतिक और सामाजिक उपेक्षा का दंश झेल रही है। भारत सरकार की निकायें इस भाषा को सिर्फ एक बोली या यों कहें कि हिन्दी भाषा के प्रांतीय रूप में ही देखती रही। भाषा के रूप में जब कभी भी इसे मान्यता दिये जाने के स्वर उठे, इसे पूर्वी हिंदी का एक रूप बता दिया गया और इसकी मौलिकता पर ही प्रश्न खड़े कर दिये गये। भोजपुरी बोलने वालों को जहाँ मातृ भाषा में प्रारंभिक शिक्षा लेने से वंचित होना पड़ा है वहीं नौकरी के अवसर से भी दूर ही रखा गया है। भोजपुरी भाषा में पठन–पाठन के सामग्रियों की कमी होने का यह भी एक प्रधान कारण रहा है। तकनीकी सहयोग की कमी तो इस भाषा के प्रयोग पर ही प्रश्नचिह्न खड़ा कर रखा है। अगर राजनीतिक और सामाजिक आधार पर किये जा रहे इस विभेद को अलग

रखकर देखा जाय तो इस बात को बहुत ही आसानी से स्वीकार किया जा सकता है कि यह भाषा आज की भारत की जीवंत भाषा है क्योंकि आज भी यह इतनी बड़ी आबादी की आधारभूत भाषा और भारत के वृहत्तर भौगालिक भूभाग में विस्तारित और एक वृहत्तर सांस्कृतिक समुदाय के सम्प्रेषण का एक सशक्त माध्यम है। भारत ही नहीं यों कहें कि भारतेतर अन्य देशों जैसे फिजी, नेपाल, सूरीनाम और मौरिशस जैसे देशों में भी भारत की सांस्कृतिक विरासत को विस्तारित करने में अपनी अहम भूमिका निभा रही है। यह शोधपत्र भोजपुरी भाषा के विविध स्वरूपों की पहचान कर उसके सामाजिक, भाषा,वैज्ञानिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं को समझने का एक प्रयास है। शोधकर्त्री ने इस शोध पत्र के माध्यम से भोजपुरी के समग्र यथार्थ से रूबरू कराने का प्रयास किया है।

कुंजी शब्द– राजनीतिक उपेक्षा, कार्यालयी भाषा, वृहत्तर संस्कृति, भौगोलिक भू–भाग।

परिचय–

सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं नैतिक चेतनाओं से संपृक्त और मानवीय संवेदनाओं के कलेवर को धारण की हुई भोजपुरी भाषा (ISO 693–3HO) एक जीवंत भाषा के रूप में स्थानीय ही नहीं अपितु विश्व मानस पटल पर अपना एक अमिट स्थान अंकित करती दिखती है। वर्तमान भारत के वृहत्तर भूभाग पर विस्तारित भोजपुरी भाषा भारत के 2011 ई0 की जनगणना के अनुसार लगभग पाँच करोड़ लोगों के द्वारा मातृ भाषा के रूप में बोली जाती है। भारत की सीमा के बाहर नेपाल, इण्डोनेशिया तथा मॉरिशस जैसे देशों में भी यह भाषा बोली जा रही है। जहाँ तक इस भाषा के विविध स्वरूप की चर्चा करें यह कभी बिहारी तो कभी देशवासी, और कभी खोतला आदि नामों से इतर भाषा के लोगों द्वारा जानी जाती है। विविध स्वरूपों के भोजपुरी को समझने से जहाँ एक ओर हम इसके मौलिक तत्व को समझ सकते हैं वहीं इससे हमें यह भी जानकारी मिलती है कि किस तरह से यह भाषा अपने मूल स्वरूप को आज तक नहीं खो पाई है। विश्व की कोई भी भाषा अपने जीवन को अक्षुण्ण रखे इसके लिये उसके विविध स्वरूप का होना उसका सम्बल बनता है, न कि उसकी कमजोरी। सम्पूर्ण विश्व के मानस पटल पर बिम्बित और विस्तारित अंग्रेजी भाषा को स्पन्दित होता देख अन्य प्रचलित भाषाओं को इससे ईर्ष्या नहीं करना चाहिए बल्कि सीखना चाहिए कि किसी भाषा में निहित विविधता और विभिन्न कारकों से प्रभावित होते हुए उसके स्वरूप जनमानस के परिवेश को बदल रहे विविध आवश्यकता की पूर्ति का एक प्रमुख संवाहक होता है। भोजपुरी भाषा को विभिन्न नामों से संबोधन मिलता रहा है जिसमें सबसे ज्यादा प्रचलित नाम 'बिहारी' है। 'बिहारी' एक ऐसा नाम है जिसमें भोजपुरी ही नहीं, मगही, मैथिली अंगिका और बज्जिका भाषा समाहित हो जाती हैं (तिवारी 1962/2001)। 'भोजपुरी बिहारी' अगर हम जनगणना के आंकड़ों पर दृष्टिपात करें तो उपरोक्त बिहारी कही जाने वाली भाषाओं में दूसरे स्थान को प्राप्त करता है। इस तरह से यह हिन्दी के ठीक नीचे है। भोजपुरी भाषा उत्तर भारत की अन्य भाषाओं जैसे मगही, छत्तीसगढ़ी और राजस्थानी भाषाओं से अपना स्थान ऊपर रखती हैं। जहाँ तक बिहार में बोली जाने वाली भाषाओं की बात करें तो यहाँ बोले जाने वाले लोगों की

संख्या में भोजपुरी भाषा की स्थिति बहुत ही मजबूत है। मॉरिशस जैसे देश की बात करें तो यह वहाँ के सबसे बड़ी जातीय समूह की भाषा है। (बिल्टू, 2004)।

भाषा की विविधता उसके प्राण को बचाकर रखती है। भाषा के विभिन्न स्तरों पर इसको अनुभव कर सकते हैं। जिस भाषा की विविधता छिन जाती है उसका अन्त स्वाभाविक ही है। पश्चिम के भाषा चिन्तकों ने एकरूपता को स्थापित करने के लिए एक बहुत बड़ी संस्था को स्थापित किया जिसे IPA (International Phonetic Association) के नाम से जानते हैं। भाषा के वर्गों को एक ही लिपि में बाँधने की कोशिश की जा रही है जिससे भाषाएँ सीखी जा सकें, उसे मरने से बचाया जा सके तथा उन्हें समृद्ध किया जा सके। परन्तु चिन्ता का बहुत बड़ा कारण तो यह बन जाता है कि अगर स्तरीय भाषा के स्वरूप को ही मूल उद्देश्य मान लिया गया तो उनकी विविधता का अंत हो जायेगा और उससे कठोरता आ जाएगी जो बहुत ही घातक साबित हो सकता है। भाषा स्तरीयता(Language Maintenance) नाम पर उसे वक्रता में ढकेलने की बजाय उसकी ऋजुता को बचाने की आवश्यकता है। भाषा की विविधता एक जीवधारी के विभिन्न अंगों की तरह है जिसके विविध कार्य होते हैं तथा जो बदलती हुई परिस्थितियों और आवश्यकता के अनुरूप अपने रूप में परिवर्तन लाता रहता है। भोजपुरी भाषा के विविध स्वरूप होने के पीछे सबसे महत्वपूर्ण कारण इसका वृहत्तर भौगोलिक विस्तार है। भोजपुरी का एक रूप वह है जो उत्तर प्रदेश के बनारस, मिर्जापुर और आजमगढ़ में है तो वही यह भारत के अन्य प्रान्त बिहार के आरा, बक्सर और सारण जैसे क्षेत्रों में बोली जाती है। स्थानीय ,भौगोलिक, आर्थिक जलवायु आदि कारकों ने इसके स्वरूप में वैविध्य लाया है। यह विविधता वर्णों के उच्चारण, शब्द रचना और उसके प्रयोग तक ही सीमित नहीं है, बल्कि वाक्य रचना के स्तर पर भी यह विविधता परिलक्षित होती है। वास्तव में इन तथ्यों को संज्ञान में रखकर भोजपुरी भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन बहुत ही कम ही हो पाया है। या यों कहें कि जो भी अध्ययन आज तक हो पाया है वह पर्याप्त नहीं है। भोजपुरी भाषा की विविधता आज भी वैज्ञानिक अध्ययन के लिए शोधार्थियों के आकर्षण का केन्द्र है।

भोजपुरी भाषा के विविध स्वरूपों के अध्ययन को एक गम्भीर विषय के रूप में लिया जाना चाहिए। भोजपुरी के वैविध्य का अध्ययन दो परिणाम ला सकती है। पहला कि इससे अस्वीकृत परन्तु अस्तित्व में रहे उन रूपों से रूबरू हों पायेंगे दूसरा कि इससे इस भाषा के आधुनिकीकरण एवं प्रचार–प्रसार में काफी मदद मिलेगी। इसकी स्तरीयता को बनाये रखने में भी इससे मदद मिलेगी। इस अध्ययन से जहाँ एक ओर पूर्वी हिन्दी/बिहारी भाषाओं के वर्गीकरण का आधार बन पायेगा वही भाषा वैज्ञानिकों के समुदाय और भाषा में रूचि रखने वाले उत्साही प्रबुद्ध लोगों को इस भाषा के सहज और बोधगम्य होने में भी काफी आसानी होगी। इन बातों को ध्यान में रखकर यह शोधपत्र भोजपुरी के विविध उच्चारण स्वरूपों का निरूपण उसके भौगोलिक एवं स्थानीय स्वभाव के आधार पर करेगी। उत्तर प्रदेश के बनारस, मिर्जापुर तथा आजमगढ़ तथा बिहार के आरा, भोजपुर और बक्सर में बोले जाने वाली भोजपुरी का मूल रूप से अध्ययन किया जायेगा।

भाषाई अन्तर सामाजिक भाषा विज्ञान और बोली विज्ञान के अध्ययन का मुख्य प्रतिपाद्य विषय रहा है। इसके अध्ययन से सामाजिक संस्कृति और आर्थिक कारणों जिससे भाषा के प्रयोग प्रभावित होते हैं को समझने में काफी कुछ सहायता मिलती है। विभिन्न भाषाओं के मध्य अन्तर को समझने के लिए यह हमें तैयार करती है। यह बताती है कि किस तरह से भाषा और उसके बीच अन्तर एक दूसरी भाषा को प्रभावित करते है। जब वे आपस में सम्पर्क में आते हैं। भौगोलिक क्षेत्रों के विभिन्नता भी भाषा में विविधता और भिन्नता लाने के कारक बनते हैं। इस तरह से कह सकते हैं कि भाषाई विविधता उसके बोलने के विभिन्न तरीके की पहचान कराती है। यह विविधता भाषा विज्ञान अध्येता के ध्यान को आकर्षित करती रही है। वैसे तेा इस विषय में काफी कुछ शोध हो चुका है। विविधता का अध्ययन खासकर 20वीं शताब्दी के अन्तिम कुछ वर्षों में आकर्षण का केन्द्र बना रहा जिसके कारण ऐसे शोधकार्य हुए जो भाषा के वैविध्य को रेखांकित करते दिखे। फिर भी इस अंक में हम उन्हीं कार्यों की चर्चा करेंगे जो इस शोधपत्र का मुख्य वैचारिक विमर्श का आधार है। लोबोभ (1966) ने न्यूयार्क शहर के भाषा को विभिन्न सामाजिक स्तर पर समझने का प्रयास किया है। उनका यह कार्य काफी कुछ सराहनीय रहा।

भोजपुरी भाषा का इतिहास बहुत ही प्राचीन रहा है। वैसे तो लिखित रूप में भोजपुरी भाषा के साहित्य बहुत कम ही उपलब्ध हो पाये हैं परन्तु जो कुछ भी साहित्य उपलब्ध हैं उससे इसके सांस्कृतिक विरासत का सहज ही अंदाजा लग जाता है। इसके पीछे सबसे प्रधान कारण इस भाषा के लोक साहित्य की प्रमुखता को स्वयंसिद्ध करती है। चाहे लोकगीत हो या लोकगाथा वह मौखिक रूप में ही भोजपुरी के सांस्कृतिक विरासत को बचाती रही है। मौखिक रूप में यह भाषा अपने इतिहास की उपलब्धियाँ बचाकर रखने में सक्षम साबित हो पायी है। लोक व्यवहार और लोक संस्कृति में रची–बसी भोजपुरी भाषा को आज किसी का मोहताज नहीं बनाता है। भोजपुरी का हिन्दी भाषा से सम्बन्ध और दोनों भाषाओं के बीच साम्यता को लेकर काफी चर्चाएँ होती रही हैं। **ग्रियर्सन** (1905) ने इस बात पर जोर दिया है कि भोजपुरी हिन्दी की अपेक्षा बंगाली के ज्यादा करीब है। जबकि **मसिका** (1991) का मनतव्य कुछ अलग ही दिखता है। जैसा कि (**बिट्टू**, 2004) ने कहा है यह विवाद कि भोजपुरी बंगला के निकट है या हिन्दी के यह निश्चित रूप से इस बात पर निर्भर करता है कि लोग **ग्रियर्सन** के मत से सहमत हैं या **मसिका** के। परम्परागत रूप से इसे हिन्दी के एक बोली के रूप में ही न देखा गया है, यद्यपि फीजी हिन्दी अपने आपमें भोजपुरी का ही एक रूप लगता है। अतः यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगा कि भारतीय संस्कृति और समाज को समझने में भोजपुरी भाषा का अध्ययन कारगर साबित हो सकता है, खासकर भारत के उत्तरी भाग के इतिहास और संस्कृति को समझने में।

भोजपुरी भाषा भारोपीय परिवार से आती है। इस भाषा का जन्म बिहार के आरा/भोजपुर से होने से जोड़कर देखा जाता रहा है। यह और बात है कि इस भाषा के नामकरण को लेकर कई विचार व्यक्त हुए हैं। फिर भी, **तिवारी** (1962) ने जो इसका लेखा–जोखा प्रस्तुत किया वह सामान्यतया भोजपुरी के अधिकांश विद्वानों के लिए मान्य है।

PUNE RESEARCH TIMES ISSN 2456-0960
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES VOL 8, ISSUE 2

उनके अनुसार भोजपुरी नाम भोज से निकलकर आया है। उज्जैन के भोज जिस स्थान पर आकर बस गये उस इलाके को भोजपुर कहा गया। भोजपुरी बोलने वाले भोजपुर समुदाय के लोग मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश के पूर्वी, बिहार के पश्चिमी, छत्तीसगढ़ के उत्तर और नेपाल के दक्षिणी तराई वाले हिस्से में बस गये। भोजपुरी भाषा के भौगोलिक विस्तार और इसके विविध स्वरूप को नीचे दिये गये तालिका से आसानी से समझ सकते हैं–

तालिका– भोजपुरी भाषा बोलनेवालों की सघन आबादी

नेपाल के जिले (दक्षिण)	बिहार के जिले (पूर्वी)	झारखण्ड के जिले (दक्षिण)	उत्तर प्रदेश के जिले (पश्चिम)
बारा	आरा/भोजपुर	गढ़वा	आजमगढ़
चितनन	बक्सर	लातेहर	बलिया
कपिलवस्तु	चंपारण	पलामू	गोरखपुर
परासी	कैमूर		जौनपुर
रौताहाट	सारण		वाराणसी

भोजपुरी बिहार की अन्य भाषाओं जैसे मगही, अंगिका, बज्जिका और मैथिली भाषाओ से सभ्यता और पीढ़ियों का सम्बन्ध रखती है। शायद इसी कारण **ग्रियर्सन** (1903) ने इन भाषाओं को बिहारी भाषा से जोड़कर देखा था। वास्तव में भारत के पूर्वी भारोपीय भाषाओं के समूह के रूप में इन भाषाओं को जोड़कर देखने की परम्परा रही है। कमोवेश ये सभी भाषाएँ एक ही लिपि को अपनाती रही हैं। भोजपुरी भाषा की बात करें तो इस भाषा की शैक्षणिक परिधि में ज्यादातर देवनागरी लिपि का ही प्रचलन रहा है। अगर भारत सरकार इस भाषा को कार्यालयी भाषा का दर्जा देने का निर्णय ले लेती है तो निश्चित रूप से भोजपुरी बोलनेवाले लोग देवनागरी लिपि को ही अपनायेंगे।

यद्यपि भोजपुरी भाषा का भौगोलिक विस्तार बहुत ही क्षेत्रों में देखा जाता है। यह अध्ययन पाँच क्षेत्रो से संकलित किये गये तथ्यों को ही अपना आधार बनाती है। विभिन्न स्तरों पर भोजपुरी भाषा के विविध रूपों के अन्तर को जानने का यह एक प्रयास है। सामान्यतया यह माना जाता रहा है कि भोजपुरी भाषा अपने अन्दर बहुत ही कम भिन्नता रखती है। इस धारणा के पीछे यह तथ्य छुपा होता है कि जिन बोलियों को इसके बोलने वाले लोगों के स्थान विशेष से जोड़कर देखा गया है वो भाषायी दृष्टिकोण से अन्य क्षेत्रों से भिन्न ही होती है।

भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार किसी भाषा की कई बोलियाँ हो सकती हैं। जब भाषा का प्रयोग विभिन्न समुदायों के द्वारा अलग स्वरूपों में होता है तो वे उनके बोली कहे जाते हैं। बोली को एक तरह से स्वउद्घोषित रूप में देखा जा सकता है जो किसी स्तरीय भाषा

का स्वरूप होता है। बोलियों में से चुने हुए रूप ही भाषा का रूप धारण करती है। जहाँ तक भोजपुरी भाषा की बात करें इसको बोलने वाले लोगों ने इसको कई लिपियों में लिखा। लिपियों को अपनाया और छोड़ा गया। वर्तमान की बात करें तो भोजपुरी भाषी मूलतः देवनागरी लिपि को ही भोजपुरी में लिखने का माध्यम बनाते हैं। अतीत में झाँककर देखें तो भोजपुरी, कैथी, महाजनी और नास्तालिका में भी लिपिबद्ध होती रही है।

भोजपुरी भाषा में एकरूपता का सदैव से अभाव दिखता है और इसका परिणाम यह भी हुआ कि इसकी अस्मिता भिन्न–भिन्न रूपों में देखी जाती रही। यही कारण बनता है कि भोजपुरी में लिखित औ मुद्रित रचनाओं की अपेक्षा इसके मौखिक रूप ज्यादा मजबूत दिखते हैं। भोजपुरी भाषा में मौखिक और लोक साहित्य की बहुत ही समृद्ध परम्परा रही है। इसके अतिरिक्त भोजपुरी में साहित्य के विभिन्न स्वरूप जैसे गद्य, उपन्यास, समाचार तथा पत्रकारिता भी बहुत अधिक मात्रा में उपलब्ध है।

यह शोधपत्र भोजपुरी भाषा के अन्तर्गत विभिन्न स्तरों पर आ रहे परिवर्तनों का परीक्षण करती है।

भाषा की समृद्धि और उसका निर्बाध विकास उसके वृहत्तर समुदाय के लोगों द्वारा बोलने और लिखने के साथ–साथ पठन–पाठन के माध्यम के रूप में प्रयोग पर भी निर्भर करता है। विद्यालयों और शिक्षण संस्थाओं में भाषा का व्यापार जितना अधिक होता है उसकी समृद्धि भी उतनी ही अधिक हो पाती है। **स्पोलस्की** (2003) ने भाषा के सम्बन्ध में इस विचार को बड़े ही तार्किक रूप में प्रस्तुत किया। भोजपुरी भाषा की बात करें तो विद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षण माध्यम के रूप में इसे स्वीकार किये जाने की दरकार है। शायद ही कोई ऐसा विश्वविद्यालय या संस्थान है जो भोजपुरी भाषा को समृद्ध करने हेतु इस दिशा में काम कर रहे हैं। यह वास्तव में एक विषम परिस्थिति है और इस आधार पर इस बात का गर्व भोजपुरी बोलनेवालों का स्वाभाविक ही है कि उनकी भाषा के प्रति वफादारी है। भोजपुरी अगर आज भी बिहारी भाषाओं का नेतृत्व कर रही है तो इसका कारण इसके बोलने वाले लोगों के आत्म सम्मान की भावना ही है। भोजपुरी बोलनेवालों की संख्या भारत के किसी अन्य प्रान्तीय भाषाओं के बोलनेवाले लोगों की संख्या से अधिक है। अतः समय की यह मांग है कि निर्देशन और पठन–पाठन के माध्यम के रूप में इस भाषा को विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में स्थान मिले। यह शोधपत्र भोजपुरी भाषा की विविधताओं को प्रकाशित विभिन्न पुस्तकों को आधार बनाकर इसे समझने का एक प्रयास है। भोजपुरी भाषा के विविधता आधारित कुछ सूचनाओं को एकत्रित कर उसकी विवेचना की जायेगी और फिर उसका निष्कर्ष निकाला जायेगा। भोजपुरी भाषा और इसके विविध बोलियों में ध्वन्यान्तर का होना, मौरफीम और वाक्य संरचना आधारित सूचनाओं को एकत्रित कर उसका विवेचन किया जायेगा।

प्रारंभिक शोध कार्य–

भाषा विविधता समाज भाषा विज्ञान और बोली के अध्ययन का एक बहुत ही रोचक और महत्वपूर्ण विषय रहा है। भाषा की इस विविधता के आधार पर इसको बोलने वाले

व्यक्ति और समुदाय के सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक आधार को समझने में काफी सहूलियत होती है। भाषा में छिपी हुई विविधता हमें इस बात को जानने में मदद करती है कि किस तरह से भाषा के विविध रूप उस भाषा को प्रभावित करती है, जब वे एक दूसरे के संपर्क में आती हैं। इसके साथ इससे हमें इस बात की भी जानकारी प्राप्त होती है कि भाषा संरचना में परिवर्तन कैसे आती है, खासकर तब जब इसका भौगोलिक विस्तार होता है। भाषान्तर्गत विविधता जो कि उसके विभिन्न बोलियों के उद्भव का कारण बनता है विगत कुछ दशकों में शोधार्थियों के अन्वेषण और शोध का मुख्य विषय रहा है। इस विषय पर कई शोध कार्य हो चुके हैं। खासकर 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जो कुछ काम हुआ है उसका उल्लेख आवश्यक है।

लेबोव (1966) ने जो शोध प्रकाशित किया है उसका सर्वप्रथम उल्लेख करना होगा। उन्होंने न्यूयार्क शहर में बोली जाने वाली भाषा को आधार मानकर उसका विस्तृत विवेचन किया है। उन्होंने अपने शोध में 'र' वर्ण के विविध उच्चारण स्वरूप का जिक्र किया। उन्होंने **मार्था विनसार्ड** (1963) और न्यूयार्क सीटी (1966) पर जो काम किया वह इस विषय को जानने की दिशा में 'मील का पत्थर' साबित हुआ। **लेबोव** के पश्चात **चैम्बर्स** (1995), **टूडगिल** (1995), और **हर्जोग** (1968) ये कुछ शोधकर्ता हुए जिन्होंने भाषायी विविधता पर काम किया। इन लोगों का समेकित मत यह रहा कि जो भाषा अपने अन्तर्गत विविधता को नहीं दर्शाती वो सिर्फ काल्पनिक ही नहीं, अनुपयोगी भी है, कारण कि संरचनात्मक विविधता भाषा को लचीला बनाये रखता है और उसके परिवर्तन में सहायक है। किसी भाषा की मूलभूत विशेषता उसका लचीला होना है जो न सिर्फ उसे विविध सामाजिक क्रियाओं को करने में उसे मदद करती है बल्कि भाषायी परिवर्तन लाने में भी उसकी मदद करती है।

जैसा कि **ट्रामेल** (1971) ने बताया कि भाषा की ध्वन्यात्मक सूची में मूल रूप से छह स्वर और इक्कीस व्यंजन हैं। **मिश्रा और बाली** (2011) हिन्दी भाषा की बोलियों के ध्वन्यात्मक भिन्नता का जिक्र करते हुए बताते हैं कि हिन्दी की बोलियां में मूल रूप से स्वरों की एक समान सूची है और जहाँ तक विविधता की बात है वह सहस्वानिक ध्वनियाँ (Allophone) हैं उनका अध्ययन यह भी दावा करता है कि हिन्दी की बोलियों में भोजपुरी सहस्वानिक विविधताएँ अधिक रखती है।

भोजपुरी भाषा साहित्य एवं जनसंचार क माध्यम के रूप में जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि भोजपुरी में अपेक्षाकृत कम ही लिखित मुद्रित साहित्य है। भोजपुरी साहित्य ज्यादातर मौखिक और लोक व्यावहारिक ही रही है। **राधिका** (2014) ने भोजपुरी के कतिपय साहित्यकारों की चर्चा की है और भोजपुरी साहित्य में **भिखारी ठाकुर** को **शेक्सपीयर** कहा है। भिखारी ठाकुर, महावीर प्रसाद, परिचय दास और रवीन्द्रनाथ ने भोजपुरी में जो कुछ लिखा है वह पीढ़ियों के प्रभावित करती रही। हाल के कुछ दशकों में भोजपुरी ने मास मीडिया को अपनी अभिव्यक्ति के एक सशक्त माध्यम के रूप में अपनाया है। आभासी परिदृश्य में भी इसकी काफी कुछ पकड़ बढ़ी है। भोजपुरी गीतों ने पूरे देश में अपनी एक अलग पहचान बना ली है। हिन्दी फिल्मों में भोजपुरी बोलने वाले लोगों को

भोले–भाले और सरल व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया जाता रहा है। हिन्दी फिल्मों में भोजपुरी बोलनेवाले को एक ऐसे रूप में प्रस्तुत किया जाता रहा है अपने भोलेपन और सहजता के साथ महानगरों में बसकर अपने पारम्परिक संयुक्त परिवार में मजबूती के साथ रहते हुए दिखाये जाते रहे हैं। हाँ जहाँ तक दक्षिण भारत के फिल्मों की बात करें, खासकर तेलगू फिल्मों में भोजपुरी बोलने वाले लोगों को नकारात्मक पक्ष के साथ प्रस्तुत किया है। एक बिहारी व्यक्ति के रूप में चित्रित भोजपुरी बोलने वाले व्यक्ति को खलनायक बनाकर उसकी उदण्डता को ही दिखाने का प्रयास किया जाता रहा है। बिहारी की दबी हुई छवि को दर्शान की कोशिश भोजपुरी भाषा और संस्कृति के मलिन स्वरूप को दिखाया जाता रहा है जो रूढिवादिता का द्योतक भर बनकर अपनी क्रिया–कलाप को समाप्त करते दिखते रहे हैं। हालांकि भोजपुरी टेलीविजन चैनल ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से भोजपुरी भाषा और संस्कृति को उठाने का प्रयास विगत कुछ वर्षों में जोर पकड़ लिया है। भोजपुरी भाषा के संरक्षण हेतु कुछेक व्याकरणविदों ने अपना उत्साह दिखाया है जिनमें प्रमुख रूप से **शुक्ला** (1981), मादद (2000), तिवारी (2001) आदि के नाम प्रमुख हैं। इन लेखकों ने भोजपुरी के व्याकरण का व्यापक संरचनात्मक और विश्लेषणात्मक आधार प्रस्तुत किया है।

PUNE RESEARCH TIMES ISSN 2456-0960
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES VOL 8, ISSUE 2

मानक रूप और विविधताएँ –

भाषा विज्ञान का एक प्रमुख उप क्षेत्र परिवर्तनशील भाषाविज्ञान है जो भाषाविज्ञान के अन्य उपक्षेत्रों को समृद्ध कर सकता है। कारण इन उपक्षेत्रों के मध्य आदान प्रदान चलता रहता है। भाषा विविधता पर किये गये कार्य और अध्ययन को प्रमुख रूप से तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है। सर्वप्रथम ऐतिहासिक विविधता है जो कि ऐतिहासिक और समय के साथ होती है। दूसरी विविधता को अधिग्रहण सम्बन्धी भिन्नता के रूप में देखा जाता है। यह विविधता भाषा को सीखने या अधिग्रहण से सम्बन्धित कारकों क कारण आती है और तीसरे को टाइपोलॉजिकल कहा जाता है जो भौगोलिक कारकों के कारण होती है। **क्रिस्टीयनसेन** और **डरवेन** (2008) और आगे चलकर राधिका (2014) ने भोजपुरी की बोलियों को भोजपुरी की किस्मों के रूप में देखने का प्रयास किया। यह अध्ययन भोजपुरी भाषा के मानक, मधेसी, पूर्वी और नागपुरी सहित चार अंतर्देशीय बोलियों और कैरेबियन, सूरीनामी, समानी और मॉरीशस सहित चार विदेशी बोलियों की भी गणना करती है। भोजपुरी भाषा बोलने वाले भोजपुरी के अन्तर्गत इन्हीं किस्मो के माध्यम से अपना कार्य व्यापार करते हैं, भोजपुरी से हिन्दी की अन्य तथाकथित बोलियों में स्विच करते हैं और हिन्दी और भोजपुरी के मध्यम कोड मिक्सिंग करते हैं। यह कोड स्विचिंग कभी–कभी डोमेन विशेष अन्तरवार्ता से तो कभी भौगोलिक कारकों से प्रेरित होती है। आज संज्ञानात्मक भाषाविज्ञान का विकास और विस्तार हो रहा है जिसमें डोमेन विशेष अन्तःक्रियाओं को शामिल किया जाता है (क्रिस्टियनसेन और डर्वेन 2008)।

भाषा का डोमेन विशेष पर आधारित और सामाकि उपयोग संज्ञानात्मक समाजशास्त्र के अन्तर्गत एक वैध विषय का स्वरूप ग्रहण कर रहा है यह देखना बहुत ही दिलचस्प है कि भोजपुरी भाषा में भिन्नता कैसे आती है ?

ध्वन्यात्मक विविधता–

भोजपुरी भाषा की विविधता को इसे बोलनेवाले व्यक्ति के ध्वनि भिन्नता को देखकर समझा जा सकता है। भोजपुरी भाषा बोलने वाले 'स' और 'श' के अन्तर को रखते हैं जैसे 'सोर' और 'शोर' दोनों शब्दों के उच्चारण का शाब्दिक अर्थ अलग–अलग है। सोर का अर्थ होता है बुलाना तो वहीं शोर का अर्थ हल्ला होता है। इसी तरह से 'बरना' और 'वरना' 'जमीन' और 'जभीन' के उच्चारण भिन्नता से अर्थ के व्यापार में अन्तर आ जाता है। यह एलोफोनिक भिन्नता भोजपुरी भाषा के विविध बोलियों में विविधता लाती है। वाराणसी में भोजपुरी बोलने वाले लोग हिन्दी के प्रभाव मं आकर 'भ' और 'ब' के उच्चारण के अन्तर को बनाये रखते हैं। भोजपुरी भाषा की कुछ किस्मों में हाने वाले पुनर्विन्यास एक छोटे स्वर के सम्मिलन से होता है।

मोर्फोफोनमिक विविधता–

भोजपुरी भाषा में ध्वन्यात्मक परिवर्तन क्षेत्रीय विधिता का कारण तो बनता ही है साथ ही मोर्फोफोनेमिक विविधता का कारण भी बन जाता है। 'परल' शब्द परिवर्तित होकर 'पडरल' बन जाता है और 'स' दीर्घ ध्वनि बनकर 'सरल' से 'सडरल' बन जाता है। आरा में भोजपुरी बोलनेवाले व्यक्ति 'उहा' शब्द को अनुनासिक ध्वनि के साथ जोड़कर उच्चारित करते हैं। यह बात 'उहिजाः' और 'ओःइजा' शब्दों के उच्चारण में भी देखा जाता है। 'ड' परिवर्तित होकर 'ओः' हो जाता है जो कि भोजपुरी बोलनेवालों के सामाजिक विविधता को दर्शाता है। हिन्दी का सभी बनारस के 'सबे' और आरा के 'सभे' के रूप में भोजपुरी में बोला
जाता है।

भोजपुरी भाषाविद 'न' और 'हन' को बहुवचन चिन्ह के रूप में वर्गीकृत करते हैं। सब ही को 'सभे' के रूप में बोला जाता है। जहाँ तक भोजपुरी में क्रियाविशेषण शब्दों के प्रयोग की बात है बनारस और उसके आसपास वाले लोग हब, हेउआ और बक्सर और आरा के लोग 'बाया'/बाटाः', बारे/बाटे का प्रयोग करते हैं।

भोजपुरी शाब्दिक भिन्नताओं को भी स्थान विशेष से जोड़कर देखती है। आरा, बक्सर और आजमगढ़ के समान 'वह' शब्द की भी शाब्दिक भिन्नता दिखती है। लोग 'कुएँ' के लिए 'कजिया' या 'इनार' शब्द को प्रयोग भोजपुरी में करते हैं। इसी प्रकार 'गोहार' शब्द का प्रयोग वाराणसी और मिर्जापुर के लोग किसी को बुलाने के लिए करते हैं, जबकि आरा और बक्सर के लोग इस शब्द का कम ही उपयोग करते हैं। यहाँ इस तथ्य को समझना आवश्यक है कि भोजपुरी भाषा एक कम औपचारिक भाषा है। इस भाषा का प्रयोग किसी आधिकारिक प्रक्रिया में या किसी संवैधानिक कार्य में कम ही किया जाता है। औपचारिक पत्राचार या जनसंचार में इसका प्रयोग कम या नहीं के बराबर ही हो पाता है। सम्भवतः शाब्दिक भिन्नता का यह भी एक प्रमुख कारण होता है। प्रायः इस बात के लक्षण विद्यमान हैं कि भोजपुरी में सबसे अधिक हिन्दी के शब्दों का प्रभाव अधिक हो पाया है। वाराणसी और मिर्जापुर जैसे क्षेत्र जो व्यावसायिक और पर्यटन स्थल के रूप में विकसित हो रहे हैं और इन क्षेत्रों में भोजपुरी बोलने वाले लोग इतनी सारी भाषाओं के सम्पर्क में आते हैं कि उनके द्वारा बोली जाने वाली भोजपुरी भाषा उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाती। उदाहरण के तौर पर उपजाने के लिए 'उगावल' या उपजावल', घोटाले के लिए 'घपला', पहुँचने के लिए 'पहुचाला' का प्रयोग करते हैं। गोरखपुर और इसके आसपास के भोजपुरी बोलने वाले लोग 'चाहुप' शब्द का प्रयोग 'पहुचाला' के बदले में करते हैं।

नये सीखने वाले के लिए 'नवसिखिया' या 'नवसिखुआ' का प्रयोग किया जाता है। जहाँ तक भोजपुरी में संख्या प्रणाली की बात है भोजपुरी में हिंदी के समान ही संख्या के अलग–अलग अंकों का उच्चारण स्थानीय भिन्नता को दर्शाती है।

निष्कर्ष

उत्तर भारत खासकर बिहार और इसके आसपास के राज्यों में भाषाओं की पारिस्थितिकी के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि हिन्दी इस क्षेत्र की एक प्रमुख भाषा है। परन्तु राज्यों की स्वदेशी और स्थानीय अन्य भाषाओं की उपेक्षा करना हिन्दी के विकास को अवरुद्ध कर सकती है। बिहार, झारखण्ड और उत्तर प्रदेश में बोली जाने वाली भाषाओं से जिन पारिस्थितिकी का निर्माण होता है वह विविधता को लिये हुए है। भोजपुरी भाषा स्वयं एक विविधता को रखकर हिन्दी के निर्माण में और उसके प्रसार में अपना योगदान देती रही है। भोजपुरी जैसी समृद्ध, विविध और सक्रिय भाषा की विशिष्टता को हिन्दी भाषा बोलने वाले अगर अपने उदात्त भाव में स्थान दें तो यह भोजपुरी ही नहीं, हिन्दी के लिए भी संजीवनी का काम कर सकती है। ऐसा प्रतीत होता है कि केन्द्रीय और स्थानीय निकायों के द्वारा भाषा सम्बन्धी लागू की गयी नीतियों के बीच सामंजस्य का अभाव है।

जहाँ तक भोजपुरी भाषा का प्रश्न है इसी विविधता को भाषान्तर ही नहीं भाषा के भीतर भी समझने की आवश्यकता है। इस शोध पत्र में भोजपुरी भाषा के भौगोलिक स्थान में भिन्नता को इसके विभिन्न बोलियों को जोड़कर देखने का प्रयास किया गया है। इस विविधता को खासकर ध्वन्यात्मक और रूपात्मक भिन्नता से जोड़कर देखा गया है। यह लेख भोजपुरी भाषा के आधुनिकीकरण और उसके शैक्षिक उद्देश्यों को साकार करने हेतु काफी कुछ उपयोगी साबित हो सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

प्रियर्सन जार्ज, 1959	भारत का भाषा सर्वेक्षण (अनु) उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान।
जैन दीपचन्द्र, तिवारी कैलाश, 1972	हिन्दी और उसकी विविध बोलियाँ, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
तिवारी भोलानाथ, 1994	हिन्दी भाषा की सामाजिक संरचना, साहित्य सहकार प्रकाशन दिल्ली।
तिवारी भोलानाथ, 1966	हिन्दी भाषा किताब महल, इलाहाबाद।
तिवारी उदयनारायण, 1998	हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
प्रवीण योगेश, 2003	दास्ताने लखनऊ, भारत बुक सेन्टर, लखनऊ
प्रवीण योगेश, 2003	ताजेदारे अवध, भारत बुक सेन्टर, लखनऊ
प्रसाद अम्बा 'सुमन'	हिन्दी और उसकी उपभाषाओं का स्वरूप, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

बाहरी हरदेव, 1966 ग्रामीण हिन्दी बोलियाँ, अभिव्यक्ति प्रकाश, इलाहाबाद।

बाहरी हरदेव, 1965 हिन्दी उद्भव विकास और रूप किताब महल, इलाहाबाद।

भाटिया कैलाशचन्द्र चतुर्वेदी हिन्दी भाषा का स्वरूप और विकास, प्रभात

मोती महल, 1989 प्रकाशन, दिल्ली।

वर्मा विमलेश कान्ति हिन्दी भाषा और उसकी उपभाषा, प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार

शर्मा श्रीकृष्ण, 1986 भाषा अनुरक्षण एवं विस्थापन, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।

आहूजा राम, 2007 सामाजिक अनुसंधान, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर एवं नई दिल्ली।

रस्तोगी कविता भाषा विमर्श

रस्तोगी कविता, 2010 समसामयिक अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, अविराम प्रकाशन, दिल्ली।

उप्रेती हरिश्चन्द्र, 2007 भारतीय जनजातियाँः संरचना एवं विकास, राजस्थान हिन्दी अकादमी, जयपुर।

उपाध्याय विजय शंकर, 2009 भारत की जनजातीय संस्कृति, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ

शर्मा विजय प्रकाश अकादमी, भोपाल

कुमार, कपिल अप्रैल 1998 भारत में जनजातियाँ (खण्ड–6) इकाई–25 (IGNOU) सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

कूचर वी. के. 1963 साइज एण्ड कम्पोजीशन ऑफ फैमिलीज इन ए थारू विलेज, वन्य जाति ।। (3)

मजूमदार, डी. एन. 1942 थारू और उनके रुधिर वर्ग, जर्नल ऑफ रॉयल एशियाटिक सोपवटी ऑफ बंगाल, वॉल्यूम–8

मजूमदार, डी.एन.एवं सामाजिक मानव शास्त्र परिचय, मयूर पेपरबैक्स,

मदान, टी. एन. 1999 नौएडा।